आपातकाल में सृजन फुलवारी

अनिता मंदिलवार 'सपना'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अनिता मंदिलवार "सपना"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-113-8
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, अनिता मंदिलवार 'सपना'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ANITA MANDILWAR 'SAPANA'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	माँ	6
2.	ज़िंदगी	7
3.	रात	8
4.	पहचान	9
5.	ईश्वर	10
6.	लालबत्ती	11-12
7.	सपना हमारा	13
8.	सृजन की बेला	14
9.	गिरती नैतिकता संवरे कब	15
10.	जान है तो जहान है	16
11.	स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत	17
12.	सहारा	18
13.	जल रहा है देश मेरा	19
14.	पेड़	20
15.	विवश	21

माँ शारदे

माँ शारदे आओ मेरे द्वार, सुन लो मैया मेरी पुकार

कमलदलवासिनी मैया
शुभ्र पट धारिणी मैया
संगीत सुहासिनी मैया
हंसवाहिनी मैया, तुम्हें नमन है माता हजार।
माँ शारदे आओ मेरे द्वार, सुन लो मैया मेरी पुकार

शब्दों का प्रवाह तुझसे
ह्रदय मृदु तुम्हारा है
तेजस्विनी है करुणामयी भी
दिव्य ज्योति प्रकाशिनी भी, सबको करती हो दुलार।
माँ शारदे आओ मेरे द्वार, सुन लो मैया मेरी पुकार

सत्य वाणी करती प्रदान
देती सबको अक्षर ज्ञान
मिथ्या शमन करणी
मार्ग कंटक हरणी, तेरे दरश से आ जाती बहार।
माँ शारदे आओ मेरे द्वार, सुन लो मैया मेरी पुकार

सात सुरों की साधना
देवी तुम स्वर्ग लोक की
सपना की विनती यही
माँ करिए कल्याण, माता करिए उपकार।
माँ शारदे आओ मेरे द्वार, सुन लो मैया मेरी पुकार

ज़िंदगी

गिर गिर कर सँभलती है ज़िंदगी।
यहाँ रेत सी फिसलती है ज़िंदगी।।

सुलझे सभी अनकही बातें उसकी।
यहाँ मोम सी पिघलती है ज़िंदगी।।

जब उसके पाँव पड़ते हैं जमीन पर।
यहाँ लहरों सी उछलती है ज़िंदगी।।

मन में विचारों का जब मेला लगता है।
तब यहाँ नदी सी उफनती है ज़िंदगी।।

सपना पूरा करने की ठानी हो सपना ने।
बच्चे की जिद सी मचलती है ज़िंदगी।।

रात

भोर का तारा यूँ शरमाया।
जम कर देखो बरसी रात।।

ढूँढती फिरती जाने किसको।
हर गली में पगली रात।।

डस लेती अरमानों को भी।
नागिन बनकर काली रात।।

धुँधली सी तस्वीर आँखो में।
खोज रही उसे सारी रात।।

कहाँ कहाँ के भेद छुपाये।
गूँगी बहरी अंधी रात।।

नीलगगन पर चाँद सितारे।
खेले आँखमिचौली रात।।

चाँद रोशन हुआ ज़मीं पर।
ताजमहल सी उतरी रात।।

सपना के जीवन में आयी।
आज तो देखो उजली रात।।

पहचान

गर्दिशों में है पहचान अब
है कहाँ जिंदा ईमान अब?

कुरीतियाँ खड़ी मुँह उठाये
सन्नाटे के मंजर क्यों छाये
कहाँ से हौसले अब लाये
है धुआँ धुआँ आसमान अब
है कहाँ जिंदा ईमान अब?

व्यस्त हैं आज यहाँ सभी बच्चे
बचे नहीं भावना अब सच्चे
दोस्ती, रिश्ते नाते सभी कच्चे
अपमानित होता सम्मान अब
है कहाँ जिंदा ईमान अब?

घर में बेटियाँ लाचार क्यों
बेटी पर हो अत्याचार क्यों
बेटी से गलत व्यवहार क्यों
शैतान बनता क्यों इंसान अब
है कहाँ जिंदा ईमान अब?

अब वही जमाना रहा नहीं
सच कहा किसी ने सुना नहीं
सिलसिला आगे बढ़ा नहीं
खोते होठों से मुस्कान अब
है कहाँ जिंदा ईमान अब?

ईश्वर

ईश्वर ने हमें
जीवन दिया
हमें उनका उपकार
याद रखना चाहिए
किसलिए जीवन दिया
ये उद्देश्य भी याद रहे
ईश्वर कण-कण में है
हमनें यही जाना है
इंसानियत जिंदा रहे
यही बस माना है
अपने अंदर दया के भाव
जीवित रखें हम
कुछ इस तरह भी
इंसान बनें हम
सबके सपने होते हैं
देखो यहाँ "सपना"
सबको हम समझें
आओ यहाँ अपना,...!

लालबत्ती

लालबत्ती
जब परेशन थिएटर की जली
मैं तब कुछ होश में ही थी
फाइब्राइड का ऑपरेशन
होना था उस दिन

एक डर
जो ऑपरेशन शब्द से ही
मन में बैठ जाता है,
भूलना मुश्किल है वो पल
उसे महसूस वही कर सकता है
जो उस पल को जिया हो
सच्चाई जानना हो तो
दर्द महसूस करना होगा

मेरे जीवन साथी को
इंतजार था
लालबत्ती बुझने का
जो बाहर इंतजार के साथ
ईश्वर को याद कर रहे थे
बीतते पलों में
उनकी बेचैनी का बढ़ जाना
ये भी भूलना मुश्किल है।

ये कहना
अतिशयोक्ति न होगी
कि उसकी पल को
मेरे साथ
उन्होंने भी जिया
सब भूलना मुश्किल है।
अंतत लाल बत्ती बुझी
और खबर आयी कि
ऑपरेशन इज सक्सेसफुल
सुकुन की रेखाएँ

माथे पर दिखाई दी उनके
होश आते ही हमनें उन्हें पुकारा
और सपना के हाथों को
अपने हाथों में लिए
बस यही कहना उनका
मैं साथ हूँ तुम्हारे
यही हूँ हरदम
मुझे तसल्ली मिली!

सपना हमारा

किसी हमदर्द ने पुकारा भी होगा।
निगाहें उठाकर निहारा भी होगा।।

हवाओं सुनाओ इक सरगम की धुन।
लगे सुनकर हमें नजारा भी होगा।।

निराशा हताशा हृदय में अब नहीं।
जमीं पर यहाँ अब सितारा भी होगा।।

रहे याद सपने यहाँ सीप मानिंद।
ख़ता या क़सूर तुम्हारा भी होगा।।

गगन पर ये तारे चमकते रहेंगे।
धरा चाँद सपना हमारा भी होगा।।

सृजन की बेला

सृजन की बेला है
साँसो की रागिनी
भ्रमर गुंजन
सोन पिपासा
इक जिज्ञासा
सपना की
अभिलाषा
मेरी साँसे
तेरा जीवन
अनकहे जज़्बात
जैसे धूप भरी
मुट्ठी में
कदमों के निशान
नई दस्तक
पारिजात के पत्ते
क्या छू सकेंगे
आसमान!

गिरती नैतिकता संवरे कब

गिरती नैतिकता संवरे कब
संस्कार अपना लें हम जब

बेटी बेटे में भेद यहाँ दूर हो
बेटों से भी प्रश्न जरूर हो
मर्यादा में रहना हम सीखें
सभी रहें अपनापन से तब
गिरती नैतिकता संवरे कब
संस्कार अपना लें हम जब

देखो हुआ कुछ तो वहाँ
पहल करेगा पर कौन यहाँ
एक दूसरे का मुँह न देखें
शुरू करें घर से ही हम अब
गिरती नैतिकता संवरे कब
संस्कार अपना लें हम जब

समाज सुगठित हो अपना
संस्कार का माला जपना
स्वार्थ, लोभ से हम दूर हों
सपना हो साकार तभी सब
गिरती नैतिकता संवरे कब
संस्कार अपना लें हम जब

जान है तो जहान है

बड़े बुजुर्गों से हमेशा यही सुना और् समझा
जान है तो है जहान!
आज ये पंक्तियाँ
कितनी सच साबित हो रही है
आज देश को है हमारी जरूरत
जागरूक रहें हम सब
जो जागरूकता फैलाये समाज में वो है महान!
हर संकट में हम एक हुए हैं
आओ हम दूर रहें
और एकता मजबूत करें
जब हम सब ठानेगें
देश बचेगा, कोरोना भागेगा
हमेशा के लिए
हाथ जोड़ रहे देश के प्रमुख
मान लो उनकी बातें
अपने आपको न यूँ करो बलिदान!
जीना है और जीना है
अकेले का जहर पीना है
टुकड़ों को सीना है
समुद्र मंथन से ही
हम बचेगें और देश बचेगा
फिर हरियाली फैलेगी, खेत खलिहान!
जान है तो है जहान।

स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

आओ कदम बढ़ायें स्वच्छता की ओर
रखें साफ सफाई, स्वच्छ रहें जरूर
हाथ नहीं मिलाओ
न ही मिलो गले
हाथ जोड़ो करो प्रणाम
करना है अब यही काम
आदत अपनी बना लो
हाथ हमेशा धोने का
दूर उनको करो जो
काम करे नफरत बोने का
स्वच्छ विचार सुंदर आचार
लायेगा सुखद समाचार
दूर होगी बीमारी
ख़त्म होगी लाचारी
आज दिखाना है यही
हम भारतवासी एक हैं
एक दूसरे से दूर रहेंगे
पर हम एक रहेंगे
यही करना वादा है
जीवन को बनाना सादा है
स्वच्छ भारत का सपना गढ़ना है
स्वस्थ भारत की ओरकदम बढ़ना है,..!

सहारा

सब चाहते हैं आसमां का सितारा बनना
पर जरूरी है किसी का सहारा बनना

मझधार में डूबती है कश्तियाँ अक्सर
हो सके तो डूबते का किनारा बनना

उपकार करो, बेसहारों की सेवा करो
बन सको तो सबकी आँख का तारा बनना

कर्म पथ पर बढ़ते जाना ही जीवन है
वरना यहाँ आसान है आवारा बनना

हो सके किसी के आँख का सपना बनना
कर्म अच्छे करके सबका प्यारा बनना

जल रहा है देश मेरा

जल रहा है देश मेरा।
मत दो उपदेश तेरा।।

आग लगी सड़को पर
रो रही है गलियाँ
तन भी है जलता
संग मन भी है जलता
जलता जनजीवन
बुझाए इसे कौन?
बोलो क्यों हो मौन?
जल रहा है देश मेरा।
मत दो उपदेश तेरा।।

माँ के आँसू बहे
पिता की आह निकले
बहनों का क्रंदन
अपने बन गए दुश्मन
सच्चाई को बिन जानें
राह दिखाए कौन?
बोलो क्यों हो मौन?
जल रहा है देश मेरा।
मत दो उपदेश तेरा।।

सलोना सा देश मेरा
संवरता इससे वेश मेरा
पर्वत घाटी वाला देश
मीठे झरनों वाला देश
विश्व शान्ति जिसका नारा
गीत प्रेम के गाए कौन?
बोलो क्यों हो मौन?
जल रहा है देश मेरा।
मत दो उपदेश तेरा।।

बहती पावन गंगा धारा
पीते प्रेम पथिक इसे सारा
ऊँचा रखता इसे तिरंगा
ऐसा भारतवर्ष हमारा
सपना कौन संवारे यहाँ
जग को राह दिखाए कौन?
बोलो क्यों हो मौन?
जल रहा है देश मेरा।
मत दो उपदेश तेरा।।

पेड़

पेड़
जब जमीन से जुड़े होते हैं
सजीव रहते हैं
पत्तियाँ रहती हरी भरी
हवाओं के चलने से
झूमती हैं डालियाँ
ये हमें देते
फल, फूल और आँक्सीजन
वातावरण को
स्वच्छ रखने में करते हैं सहयोग
जब जुदा हो जाते
जड़ से अपने
नाम बदलकर लकड़ी बन जाता
रखे जाते टीले में सूख जाते हैं
मृत हो जाते हैं
और काम आते जलावन के लिए
फर्नीचर बनाने में
ऐसा ही हमारा जीवन भी है
ये देते हैं संदेश
हम अपने जड़ो से जुड़े रहें
तभी सपना होगा साकार
हाँ तभी,....!

विवश

हम विवश है
कितने लाचार
ऐसा लगता है
पर हमेशा
ऐसा होता नहीं
हम बहुत कुछ
कर सकते हैं
करते नहीं
ये अलग बात है
अगर करना चाहें तो
रास्ते बहुत हैं
इतना आसान
नहीं है ये
कहीं मर्यादा
कहीं शर्म
कहीं मजबूरियाँ
रिश्तों की होती है
फिर भी
कोशिश करनी चाहिए
हमें जरूर पूरे मन से!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार
अनिता मंदिलवार 'सपना'
पता
संजीव सिन्हा
जरहागढ़ शिव मंदिर के पास,
अंबिकापुर, सरगुजा छतीसगढ़
पिन-497001
E mail- anita.mandilwar1@gmail.com
Mobile - 9826519494

प्रिय साथियों,

कोरोना वायरस संक्रमण फैलने के कारण हम घर पर समय व्यतीत कर रहें हैं ऐसे में साहित्य सृजन अच्छा विकल्प है। अंतरा शब्दशक्ति के आवाह पर ये पन्द्रह रचनाएँ लिखने की प्रेरणा मिली।

सर्वप्रथम माँ शारदे की स्तुति के साथ स्वच्छता, देश की स्थिति, विवशता, नैतिकता, जिन्दगी जैसी कविताएँ इसमें शामिल हैं

जिस स्थिति से हम गुजर रहें हैं, जल्द ही उबर पाएँ। ईश्वर से इसी प्रार्थना के साथ..

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-113-8
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/